Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मरुस्थल क्षेत्र (पाली जिले) में ग्रामीण क्षेत्र में विकास की समस्या- एक भौगोलिक अध्ययन

ओम प्रकाश*

* सहायक आचार्य (VSY) भूगोल, राजकीय महाविद्यालय,सोजत सीटी पाली (राज.) भारत

शोध सारांश – ग्रामीण क्षेत्र का भौतिक उदय और विकास विश्व के समस्त भागों में लगभग समान रूप से हुआ है तथापि आधुनिक समय में भी गांव गांव का विकास एक समान नहीं हुआ है और ना ही पहले हुआ था। ग्रामीण विकास का अभिप्राय है, कि व्यक्ति विशेष का एक समूह जो गांव में निवास करता है तथा उनके जीवन शैली में परिवर्तन को ग्रामीण विकास का दर्जा दिया जाता है। ग्रामीण विकास आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन का महत्वपूर्ण पहलू है। ग्रामीण विकास का आशय है ग्रामीण क्षेत्र का संपूर्ण विकास ग्रामीण से आशय है गांव में निवास करने वाले जिनकी जीविका का मूल आधार कृषि है। अर्थात ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना ग्रामीण विकास कहलाता है। ग्रामीण क्षेत्र का विकास देश के विकास का आधार है। क्योंकि भारत में 68.84 प्रतिशत जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। वह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।

ग्रामीण विकास में कृषि विकास के साथ-साथ आधारभूत सेवाओं के निर्माण के साथ-साथ मानवीय विकास के विभिन्न विविध पहलू को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है बगैर बुनियादी सेवा के निर्माण एवं विकास के संपूर्ण ग्रामीण विकास कल्पना करना व्यर्थ है। बुनियादी सेवा में रेल, सड़क परिवहन, दूर संचार, ऊर्जा ,शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि विकास आधुनिक सिंचाई सुविधा सुविधा, स्वच्छ जल आपूर्ति, रोजगार मुखी कार्यक्रम आदि शामिल है। इन बुनियादी आधारभूत सेवाओं के विकास पर ही ग्रामीण विकास एवं देश का विकास टिका हुआ है। यदि देश के ग्रामीणों में आधारभूत सुविधाओं का विकास नहीं है तो संपूर्ण ग्राम का विकास संभव है।

शब्द कुंजी –कृषि, पेयजल, ग्रामीण विकास, पशुपालन, रोजगार, जनसँख्या।

प्रस्तावना – ग्रामीण विकास का अभिप्राय है, कि व्यक्ति विशेष का एक समूह जो गांव में निवास करता है तथा उनके जीवन शैली में परिवर्तन को ग्रामीण विकास का दर्जा दिया जाता है। ग्रामीण विकास आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन का महत्वपूर्ण पहलू है। राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में जिलों की कुल संख्या लगभग 12 जिले हैं जो जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, जालौर, जोधपुर, चुरु, झुन्झनू, बीकानेर, अनूपगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़, नागौर, सीकर, पाली का पश्चिमी भाग लगभग 77.73 प्रतिशत (2011) जनसंख्या गांव में निवास करती है। इस क्षेत्र में सर्वाधिक कृषि पशुपालन तथा मजदूरी प्राथमिक व्यवसाय पर अपना जीवन यापन करते हैं। इन क्षेत्रों में जैसलमेर बाड़मेर एवं जालौर में सबसे अधिक जनसंख्या गांव में रहती है जो क्रमश: 86.71, 93.02 ,91.70% है। यह जिले में आर्थिक व शिक्षा की दृष्टि से सबसे पिछड़े हुए जिले हैं जिनमें जीवन स्तर बहुत ही नीचे इन जिलों में मूलभूत संसाधनों तथा आधारभूत सुविधाओं का अभाव में संपूर्ण विकास ढंग से नहीं हो पाया है। मरुस्थलीय भाग के जिलों पर विश्लेषण से आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य जिलों में बहुत नीचे स्तर पर हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण विकास के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन- ग्रामीण विकास के लिए केंद्र व राज्य सरकार के द्वारा समय-समय पर आधारभूत विकास के लिए ग्रामीण विकास योजनाएं लागू की जाती है। जिनमें से मरुस्थलीय क्षेत्रों में भी उनका विशेष विश्लेषणात्मक अध्ययन में प्रमुख योजनाएं इस प्रकार:- 1. भारत निर्माण कार्यक्रम 2.मुख्यमंत्री ग्रामीण बीपीएल आवास योजना 3.प्रधानमंत्री आवास योजना 4.प्रधानमंत्री सड़क योजना 5.जननी सुरक्षा योजना 6.कुटीर ज्योति योजना 7.इंदिरा आवास योजना 8.अक्षत योजना 9.मरुस्थलीय कार्यक्रम एवं सूखा संभावित कार्यक्रम 10. अकाल राहत कार्यक्रम 11.ग्रामीण पेयजल योजना 12.स्वच्छ भारत योजना 13. जल जीवन मिशन योजना 14. प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना 15.अरावली विकास योजना इत्यादि को ध्यान में रखते हुए राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में ग्रामीण विकास का विश्लेषणात्मक एवं महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखकर किया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व – भारतीय अर्थव्यवस्था पर दृष्टिपात करते हुए ज्ञात होता है कि अर्थव्यवस्था के एक भाग में परिवर्तन विकास एवं आधुनिकरण की प्रक्रिया का स्तर बहुत अधिक है जबकि दूसरे भाग में अपेक्षाकृत बहुत ही कम रहता है। इस विकास के इन पहलुओं में अंतर का विश्लेषणात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। तथा एक विकसित तथा विकासशील आर्थिक क्षेत्र में रोजगार की दृष्टि से आवश्यक भी होता है। पाली जिले के ग्रामीण विकास में शोध का निम्न प्रकार से महत्व होता है-

1. ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों के स्वरूप और प्रक्रियाओं को समझने में योगदान रहता है।

2. विकास का आर्थिक–सामाजिक के क्षेत्र में अध्ययन का सैद्धांतिक महत्व।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में विकास का रोजगार एवं योजनाओ का विश्लेषण करने में महत्व।
4. संपूर्ण समाज का विविधता के अध्ययन में महत्व।
5. सरकार की लाभकारी योजनाओं की वास्तविकता एवं वस्तु स्थिति ज्ञात करने में सहायक होता है।

शोध के उद्देश्य:

1. गांव में समग्र विकास में ही देश का विकास निहित है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास एवं वृद्धि के फलस्वरुप उत्पन्न हुए सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक परिवर्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए निम्न उद्देश्य है: मरुस्थलीय क्षेत्र में गांव में आर्थिक सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. विकास योजनाओं का मूल्यांकन व ग्रामीण समाज पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना।
3. मरुस्थलीय क्षेत्र में सामाजिक संरचनात्मक सांस्कृतिक, आर्थिक कारकों में अंतर्संबंधों का अध्ययन।
4. पाली जिले में पेयजल, परिवहन व संचार सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

शोध प्रविधि– यह शोध विषय द्वितीय आंकड़ों पर तृतीय आंकड़ों पर आधारित है। साथ ही आवश्यकता अनुसार इसमें प्राथमिक आंकड़ों का भी प्रयोग किया जा सकता है जिसमें द्वितीयक आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। तथा सूचकांक के माध्यम से आंकड़ों का आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

तालिका 1 – राजस्थान के मरुस्थलीय जनाकिकीय स्थिति

S.	District	Rural pop. %	Urban pop. %	Population growth 2001-2011	Density
1.	Jhalor	91.7	8.3	26.20	172
2.	Badmer	93.0	7.0	32.50	92
3.	Nagour	80.7	19.3	19.20	187
4.	Jeslmer	86.7	13.3	31.80	17
5.	Ganganager	72.8	27.2	10.0	179
6.	Bikaner	66.1	33.9	24.30	78
7.	Churu	71.7	28.3	20.30	147
8.	Junjunu	77.1	22.9	11.70	361
9.	Jhodhapur	65.7	34.3	27.70	161
10.	Hanuman -gardh	80.3	19.7	16.90	184
11.	Sikar	76.3	23.7	17.0	346
12.	Pali	77.4	22.6	11.90	164
	Rajasthsan	**75.1**	**24.6**	**21.30**	**200**

Sourece: rajasthan cences handbook raj.govt.2011

पाली जिले में जनन की स्थिति राजस्थान के कुल जनसंख्या 2037573 जिले में है। मरुस्थलीय क्षेत्र का 75.1% आबादी गांव में निवास करती है। जिसमें राजस्थान में मरुस्थलीय क्षेत्र के पांच जिले से हैं। जिनमें राजस्थान की कुल जनसंख्या का 80% से अधिक भाग ग्रामीण जनसंख्या का है इन क्षेत्रों में जैसलमेर, बाड़मेर एवं जालौर में सबसे अधिक जनसंख्या गांव में रहती है। जो क्रमश: 86.71, 93.02 एवं 91.70 प्रतिशत है। जबकि इन जिलों की जनसंख्या घनत्व आबादी जिले से काफी कम है। जैसलमेर का सबसे कम जनसंख्या घनत्व 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। राजस्थान में मरुस्थलीय क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि में तेजी से वृद्धि हो रही है देखा। जाए तो बाड़मेर जैसलमेर की सबसे ज्यादा जनसंख्या वृद्धि दर है जो क्रमश: 32.5 एवं 31.80% है। मरुस्थलीय क्षेत्र के जिलों की औसतन जनसंख्या वृद्धि दर या दर्शा रहे हैं कि इंची क्षेत्र में जनसंख्या नियंत्रण के लिए जागरूकता की कमी या सरकार की योजनाओं से कहीं ना कहीं वंचित है। या ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी के कारण जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण माना गया है दूसरा प्रमुख कारण महिला शिक्षा में कमी राजस्थान में जनसंख्या बढ़ने से गरीबी में भी वृद्धि हो रही है।

क्रं.	जिला	कुल	पुरुष	महिला
1.	Jalor	54.9	70.7	38.5
2.	Badmer	56.5	70.9	40.6
3.	Naogor	62.8	77.2	47.7
4.	Jeslmer	57.2	72.0	39.7
5.	Gaganager	69.6	78.5	59.7
6.	Bikaner	65.1	75.9	53.2
7.	Churu	66.8	78.8	54.0
8	Ghunjunu	74.1	86.9	61.0
9	Jodhapur	65.9	79.0	51.8
10	Haumangardh	67.1	77.4	55.8
11	Sikar	71.9	85.1	58.2
12	Pali	62.4	76.8	48.0

राजस्थान की मरुस्थलीय क्षेत्र में साक्षरता का अस्तर राष्ट्रीय औसत से कम है तथा महिला की साक्षरता पर गौर करें यह स्थिति इतनी खराब है कि कल महिला का लगभग 50% भाग अशिक्षित है। जो कभी विद्यालय गए ही नहीं राजस्थान के जालौर बाड़मेर एवं जैसलमेर जिला में शिक्षा का स्तर देखने लायक है यही महिला शिक्षा न्यूनतम स्तर पर है। 38.5 40.6 एवं 39.7 प्रतिशत मात्रा है। मरुस्थलीय क्षेत्र में यहां आंकड़े शिक्षा की सुविधा दो पर काम विकास को दर्शाता है। अत: ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों में भौतिक सुविधाओं की स्थिति मजबूत और बेहतर करने चाहिए राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में रेट के टीलों में इनकी मकान है । जिनकी झोपड़ियां प्रमुख आवास होती है। यह मुख्यमंत्री आवास योजना एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के चलते पक्के आवासों में वृद्धि हुई है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की आवासीय स्थिति बहुत दाहिनी है यह लोग कच्चे छप्पर घास भुस लकड़ी से झोपड़िया में अपना जीवन गुजार रहे हे। गर्मी दिनो को बारिश व गर्मी में विकट परिस्थितियों का भीषण सामना करना पड़ता है। आंधी और तूफान में इन परिवारों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो जाती है।

पेयजल – राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में गांव के लिए प्रमुख और मुख्य समस्या पेयजल की है। ग्रामीण लोगों को शुद्ध पेयजल प्राप्त नहीं होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग जल संरक्षण के लिए बड़े–बड़े टंकियां का निर्माण ताकि टाको का निर्माण करते हैं। गांव में महिलाओं को पानी के लिए लंबी दूरी तय कर अपनी दूर से लाना पड़ता है क्योंकि लोग ढानियो में दूरदराज क्षेत्रों में निवास करते हैं। सरकार ने कई योजनाओं में घर–घर टैंक की सुविधा भी की गई है।

रोजगार – राजस्थान मरुस्थलीय क्षेत्र में ग्रामीणों की प्रमुख समस्या रोजगार मजदूरी पशुपालन एवं कृषि कार्य है। कृषि मानसून पर निर्भर है। वर्षा की कम मात्रा के अभाव में ग्रामीण क्षेत्र से पुरुषों का रोजगार की तलाश में प्रवास करते हैं। सरकार ने मनरेगा योजना ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में घर पर रहने वाली महिलाएं कार्य करती है। यह रोजगार बढ़ाने व उपलब्ध कराने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

मरुस्थलीय क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र की प्रमुख समस्याए – मरुस्थलीय क्षेत्र में शिक्षा का स्तर बहुत ही निम्न होता है। जिसमें ग्रामीण योजना की पूरी जानकारी से वंचित रहते हैं जिसके कारण योजना का लाभ सही ढंग से नहीं मिलता है आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य क्षेत्रों से बहुत नीचे स्तर पर मरुस्थली क्षेत्र में संसाधनों की कमी भी प्रमुख समस्या है। जिसके अभाव में भारी मात्रा में कार्यशील जनसंख्या का प्रवास रोजगार की तलाश में बढ़ जाता है।

1. महिला शिक्षा का न्यूनतम स्तर से महिला सशक्तिकरण का स्तर निम्न है।
2. ग्रामीण क्षेत्र दूरदराज ढाणीया में होने से संचार सुविधाओं के अभाव में जागरूकता की कमी से विकास योजना का लाभ सही नहीं पहुंच पाता है।
3. मरुस्थलीय क्षेत्र में जल के अभाव होने से आज भी शुद्ध पर जल एवं सिंचाई की प्रमुख समस्या रहती है।
4. यहां प्रमुख व्यवसाय पशुपालन एवं मजदूरी प्राथमिक व्यवसाय पर ही ज्यादातर जनसंख्या निर्भर है।

निष्कर्ष एवं सुझाव – ग्रामीण क्षेत्र मरुस्थलीय क्षेत्र पॉलिश पाली जिले में आधारभूत सुविधाओं के अभाव से ग्रामीण क्षेत्र का संपूर्ण विकास धीमी गति से हो पता है क्योंकि गांव के विकास स्तर में प्रत्येक गांव आसमान रूप से ढाणीया में बसे हुए हैं जो अलग-अलग दूर-दूर है ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की परी समस्याएं प्राथमिक क्षेत्र के अलावा तृतीय तृतीय व्यवसाय में बहुत ही कमी है शिक्षा एवं स्वास्थ्य की सुविधा भी बहुत ज्यादा है क्योंकि रेगिस्तान और रेतीला इलाका होने की वजह से विकास में गति कम है। राजस्थान राज्य में सामाजिक-आर्थिक विकास भौतिक कारकों से प्रभावित है। पश्चिमी राजस्थान में मरूस्थलीय दशाएँ एवं दक्षिणी राजस्थान में अरावली पर्वतमाला की अवस्थिति के कारण इस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल का 69.96 प्रतिशत भाग व कुल जनसंख्या का 60.81 प्रतिशत भाग निम्न व अतिनिम्न विकसित है। राज्य में सामाजिक-आर्थिक विकास का स्तर कृषि विकास से सकारात्मक रूप से संबंधित है। यह शोध विकास के आयामों और पिछड़ेपन की स्थिति विश्लेषण करने में मदद करता है और संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए भविष्य की योजना और सूक्ष्म स्तर पर विकास के स्तर में स्थानिक भिन्नता को कम करने के लिए एक प्रासंगिक रणनीति तैयार करने के लिए भी उपयोगी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. माथुर, बी.एल. (2009) श्ग्रामीण अर्थव्यवस्थाश अर्जुन पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
2. डॉ. माथूर, बी.एल. (2009) श्भारतीय अर्थव्यवस्थाश अर्जुन पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
3. डॉ. माथुर, रीता (2009) श्आर्थिक विकास और योजनाश अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. तिवारी आर.टी. और सिन्हा आर.सी. (1988) भारत में ग्रामीण विकास, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. डॉ. गर्ग डी.पी., (1986) श्एकीकृत ग्रामीण विकास और सहकारिता, शिव प्रकाशन, इंदौर, पृ. 256.
6. के. एल. चार्लिस (1990) टोटल डेवलपमें, नेशनल बुक सेन्टर, दिल्ली।
7. मार्ग दर्शिका, 2011 मनरेगा तथा अंकेक्षण भारत सरकार।
8. योजना (पत्रिका) 2013-14, ग्रामीण विकास मंत्रालय, दिल्ली।
9. कुरूक्षेत्र पत्रिका (2014) ग्रामीण विकास मंत्रालय, दिल्ली।

****